Puiti

Dr. Puiti Ranjan
Assistant Professor
H.D Jain college (Ara)

BA Part-I

Paper-I

Topic- Rig vedic Sabhyata-3

प्राग्वैदिक वैदिक धार्मिक

1. प्राग्वैदिक धर्म का स्वरूप व्यावहारिक और उपयोगितावादी था।
2. वैदिक धर्म पूर्णतः प्रवृत्ति मार्गी है।
3. ऋषिगण विश्व को अमंगलकारी ईश्वर का स्थान नहीं मानते थे।
4. वैदिक देवताओं में पुरुष भाव की प्रधानता है।
5. अधिकांश देवता की आराधना मानव रूप में है, किन्तु भी पशु रूप में भी उनकी कल्पना की गई है। इन्द्र की कल्पना वृषभ के रूप में तथा सूर्य का अश्व के रूप में की गई। पशु पूजा नहीं होती थी।
6. प्रकृति का दैवीकरण किया गया था।
7. देवताओं का मानवीकरण था।
8. पुनर्जन्म की आस्था मजबूत न थी।
9. देवताओं में ऊँच-नीच का भेद न था।

ऋग्वेद में कुल देवताओं की संख्या लगभग 33 के आस-पास बताई गई है। इनमें इन्द्र, अग्नि वरुण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। ऋग्वैदिक काल में सबसे महत्वपूर्ण देवता इंद्र है, जो युद्ध एवं वर्षा के देवता हैं। इंद्र के लिये ऋग्वेद में सर्वाधिक 250 सूक्त समर्पित है। तूफान व पुरन्दर के रूप इनका उल्लेख है। इन्द्र ने पुलु वि रूप में वृत्रों (राक्षसों) से आप (जल) को मुक्त किया। ऋग्वेद में इन्द्र के अन्य नाम अत्सुजीत, पुरभिद है। द्यौस उसके पिता हैं। अग्नि उसका भाई है। मरुत उसका सहयोगी है। पृथ आयुध वज्र था। सबसे प्राचीन देवता द्यौस थे। उसके बाद पृथ्वी थी। दोनों को एक साथ द्यावा पृथ्वी कहा जाता था।

अग्नि — इससे महत्वपूर्ण देवता थे। देवता व मानव के बीच मध्यस्थ थे। ऋग्वेद में 200 सूक्त इनको अर्पित है। तीसरे महत्वपूर्ण देवता वरुण थे। इसकी 30 सुक्तों में है। वरुण ऋतु के संरक्षक थे, अतः इन्हें ऋतस्यगोप भी कहा जाता था। वरुण ईरान में अहुरमज्दा तथा यूनान में ओरनोज नाम से प्रतिष्ठित था।

ऋग्वेद के अन्य देवताओं में सोम, मित्र, यम, नासत्य (अश्विन) विष्णु, रुद्र, पूषण आदि थे। कुछ अर्द्ध देवता भी थे। यथा - विश्वेदेव, आर्यमन (विवाह से संबंधित) ऋभु, गंधर्व, अप्सरा इत्यादि सोम की चर्चा नवें मण्डल में है। मूल निवास स्वर्ग किन्तु पर्वतीय क्षेत्र में रहते थे। मित्र वरुण से संबंधित शपथ व प्रतिज्ञा के देवता है। यम मृत्यु के देवता हैं। विष्णु - यज्ञ से संबद्ध, तीन कदम के देवता थे। रुद्र अनैतिक आचरणों से संबद्ध है। पूषण सूर्य से संबद्ध थे, यह सड़क व पशुपालकों व चारागाह के देवता थे। ऋग्वेद में उर्वशी की चर्चा है।

ऋग्वेद में कुछ देवियों की चर्चा है, यथा - ऊषा, अदिति, निशा (रात्रि) अरण्यानी, सरस्वती और पृथ्वी।

ऋग्वेद में दो जैन तीर्थंकर ऋषभ तथा अरिष्टनेमि के नाम मिलते है।

ऋग्वेद में ही ॐ भूर्भुवः स्वः नाम से प्रसिद्ध गायत्री मंत्र संबद्ध है। इसमें देवी सविता की आराधना की गई है।

ग्रीक विद्वान यास्क ने देवताओं के तीन वर्ग निर्धारित किए। (6)

(1) आकाश लोक से संबंधित देवता - द्यौस, वरुण, मित्र, सूर्य, अश्विन (नासत्य) पूषण, सावित्री, विष्णु, ऊषा।

2. वायु लोक - मारुत, वायु, वात, रुद्र, इन्द्र इत्यादि।

3. भू-लोक - सोम, अग्नि, पृथ्वी, सरस्वती

4. <u>ऋग्वैदिक दर्शन</u>

ऋग्वेद में अग्नि के बारे में कुछ चर्चाएं मिलती हैं - वह यह कि अग्नि के एक नाम हैं या अनेक नाम हैं। इससे एकेश्वरवाद की झलक मिलती है। ऋग्वेद में कहा गया है - सत्य कथन एक है जिसे विभिन्न ऋषि अलग-अलग मानते हैं। उपासना का मुख्य उद्देश्य - भौतिक सुखों की प्राप्ति था। उपासना की विधि थी - प्रार्थना या यज्ञ। यज्ञ की तुलना में प्रार्थना अधिक प्रचलित। प्रार्थना व्यक्तिगत व सामूहिक होती था। यज्ञ में मंत्रोच्चारण को अधिक महत्व प्राप्त नहीं था। ऋग्वैदिक काल में किसी मंदिर की चर्चा नहीं मिलती।

<u>मृतक संस्कार</u>

ऋग्वेद के 5 सूक्तों में इसकी चर्चा है। अधिकांशतः अग्नि संस्कार होता था। अग्नि ही पृथ्वी पर से पितृ एवं देवताओं का वाहक का कार्य करती है। मार्ग में सावित्री मृतक का दिग्दर्शन करते थे, तथा पूषण उसकी रक्षा करते थे। कभी-कभी मृतक को दफनाया जाता था। एक स्थान पर पृथ्वी से प्रार्थना की गई है कि वह मृतक पर अधिक दबाव न डालें। एक सूक्त में आत्मा का उल्लेख 'मनस' के रूप में हुआ है।